भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान पत्रिका
वर्ष 30 अंक (2) दिसम्बर 2022 पृ. 109-114
DOI: 10.56042/bvaap.v28i2.66516

कोरोना महामारी के दौर में विज्ञान संचार की भूमिका

कविता वर्मा, बी एल गर्ग एवं सुधांशु अग्रवाल
एकेडमी ऑफ़ साइंटिफिक एंड एनोवेटिव रिसर्च (ए.सी.एस.आई.आर), ग़ाज़ियाबाद
सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर)
इंडियन नेशनल साइंस अकेडमी, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110 002

सारांश

इतिहास के काल खंडों को पलट कर देखा जाए तो मनुष्य समय-समय पर त्रासदियों का साक्षी रहा है। महामारियां भी उनमें से एक है। भूतकाल में ऐसी कई महामारियां जैसे- स्पैनिश फ्लू, इन्लूएंजा आईं जिसने मानव जीवन को बुरी तरह से प्रभावित किया है। कोरोना महामारी भी उन्हीं महामारी में से एक है जिसने मानव जीवन को पलट कर रख दिया। ऐसी स्थिति में विज्ञान संचार एक आवश्यक तत्व की भाँति उभरकर सामने आया है। प्रस्तुत शोधपत्र में कोविड-19 के दौर में विज्ञान संचार की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

Role of science communication during Covid Pandemic in India

Kavita Verma, B L Garg & Sudhanshu Aggarwal
Academy of Scientific and Innovative Research (ACSIR) Ghaziabad
CSIR-National Institute of Science Communication and Policy Research (NIScPR)
Indian National Science Academy, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi 110 002

Abstract

History is evident that human beings have faced disasters from time to time. Pandemics are one of them. In the past, many Pandemics like influenza, Spanish flu etc. have affected human generation gravely. Corona Pandemic is one of the same pandemics that has rolled human life to great extent. In such a deadly situation, Science communication appears as an important element in creating awareness. In this review paper we are discussing role of science communication during covid-19 in India.

प्रस्तावना

पूरे विश्व ने भयानक कोरोना जैसी महामारी को झेला है। शायद ही कोई ऐसा देश होगा जो कोविड-19 नामक महामारी से बच पाया होगा। इस महामारी ने आर्थिक, सामाजिक दोनों व्यवस्थाओं को बुरी तरीके से प्रभावित किया है। इस महामारी की चपेट में आकर कई देश पूरी तरह से बर्बाद होने की कगार पर आ गए हैं। लाखों की संख्या में लोगों की जाने चली गई। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय के अनुसार, 28 अगस्त 2022 तक इस वायरस से भारत में 3,37,66,707 लोगों को संक्रमित किया है और 4,48,339 लोगों की जान ले ली है। महामारी की सबसे भीषण बात यह होती है कि इसके आते ही इसका तत्काल इलाज संभव नहीं हो पाता। इसका मात्र एक ही बचाव होता है और वह है, सही सूचना का सही वक्त पर लोगों तक पहुँचना। यदि सूचनाएँ सही वक्त पर लोगों तक पहुंचेगी तो उनको बचाया जा सकता है। ऐसा कहा जाता है 'रोकथाम इलाज से बेहतर है! भारत में भी कुछ ऐसा ही देखने को मिलता है। यहाँ की मीडिया ने सही वक्त पर लोगों को सारी सूचनाएं उपलब्ध कराने का भरसक प्रयत्न किया है। ताकि लोग अपने-आपको इस भीषण बीमारी के प्रकोप से बचा सके। मीडिया ने जनमानस में विज्ञान का संचार करके लोगों में नई चेतना का प्रसार किया है। ऐसा कहा जा सकता है कि कोरोना महामारी के इस दौर में विज्ञान संचार ने एक अतुल्यनीय भूमिका निभाई है। भारत देश में विज्ञान का उद्भव बहुत पहले हो गया था। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त अवशेषों से वहाँ के लोगों की वैज्ञानिक दृष्टि का प्रमाण मिलता है। चरक, सुश्रुत और नागार्जुन जैसे महान वैज्ञानिकों ने समाज को विज्ञान की अनूठी समझ दी है।

चरक ने समाज को चरक संहिता जैसा अमूल्य उपहार दिया है। चरक संहिता संस्कृत भाषा में लिखा गया एक विशाल महाग्रंथ है। इसको महाज्ञाता चरक ने 8 भागों और 120 अध्यायों में बांटा है। इसकी रचना के पीछे कहा जाता है कि चरक संहिता की रचना राजा कनिष्क के शासन काल में हुई थी। राजा कनिष्क बौद्ध थे। चरक संहिता को चिकित्सा प्रधान ग्रंथ की भी संज्ञा दी गयी है। यदि बात की जाये सुश्रुत की तो सुश्रुत ने समाज को विज्ञान की एक अनूठी समझ भेंट की है। जिसे 'सुश्रुत संहिता' कहा जाता है। यह शल्य चिकित्सा पर आधारित है। सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का जनक भी कहा जाता है। सुश्रुत ने शल्य क्रिया के लिए 125 तरह के उपकरणों का प्रयोग किया। इन उपकरणों की खोज शल्य क्रिया की जटिलता का समाधान के हेतु किया गया था। इन उपकरणों में विशेष प्रकार के चाकू, सुइयाँ, चिमटियाँ आदि शामिल थे। इसके साथ ही सुश्रुत ने ऑपरेशन की प्रक्रिया को भी काफी हद तक आसान बना दिया। उन्होंने लगभग 300 प्रकार की ऑपरेशन प्रक्रियाओं की खोज की है। सुश्रुत संहिता को आयुर्वेद और शल्यचिकित्सा का प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ माना जाता है। इसके बारे में यह भी कहा जाता है कि यह आयुर्वेद के तीन मूलभूत ग्रन्थों में से एक है। यह ग्रंथ इतना उपयोगी है कि इसका अनुवाद अरबी भाषा में भी किया गया। जिसे किताब-ए-सुश्रुत की संज्ञा दी गयी है। हमारा भारत देश ऐसे तमाम विज्ञान संचारों से भरा हुआ है जिसने समय-समय पर लोगों में जारूकता उत्पन्न करने की और उनकी समस्याओं को हल करने की हर मुमकिन कोशिश की है।

सामग्री एवं विधि

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णात्मक शोध पर आधारित है। इस शोध कार्य को करने के लिए अवलोकन शोध प्रविधि के साथ अंतर्वस्तु विश्लेषण का भी प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र को बनाने में भूतकाल में हुई महामरियों के दौर में विज्ञान संचार की भूमिका पर हुए शोधपत्रों का अवलोकन किया गया है। इसके अवाला कोविड-19 के प्रति लोगों की जानकारी को समझने के लिए भारत की राजधानी दिल्ली के गुरु तेग बहादुर नगर में एक सर्वेक्षण किया गया है। यह सर्वेक्षण करने के लिए 500 लोगों का चुनाव किया है। यह चुनाव रैंडम सैंपलिंग तकनीकी के तहत किया गया है।

आधुनिक युग में मनुष्य ने लगभग अपनी प्रत्येक समस्या का हल खोज निकाला है। 'वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान की नई खोजें हर किसी को प्रभावित और आकर्षित करती हैं। हर वर्ग के लोग नई खोजों के बारे में अपनी भाषा में अधिक से अधिक जानने के लिए उत्साहित रहते हैं। आज लगभग प्रत्येक समाचार पत्र में विज्ञान आविष्कारों को प्रकाशित किया जाता है। वहीं खास विज्ञान विषय पर पत्र-पत्रिकाएं भी निकलने लगी हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी विज्ञान की आश्चर्यजनक खोज को प्रमुखता से दिखाया जाता है।' विज्ञान संचार हमेशा से ही समाज में एक आवश्यक तत्व की भांति कार्य करता रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य संचार माध्यमों द्वारा समाज में विज्ञान की जानकारी देना है और लोगों में वैज्ञानिक प्रवत्ति को बढ़ाना है। हम किसी मुद्दे को किस भांति देख रहे हैं, इसमें संचार माध्यमों और उनके द्वारा गठित संदेश की अहम् भूमिका होती है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पूरा विश्व समय-समय पर भयानक महामारियों के प्रकोप के झेल चुका है और वर्तमान में भी एक भयानक महामारी जिसे आज हम कोविड-19 के नाम से जानते हैं उसको झेल रहा है।

महामारी उस संक्रामक बीमारी को कहते हैं जो एक ही समय में पूरे विश्व में फैल रही हो और जिसकी कोई दवा उपलब्ध न हो। विश्व में महामारियों का इतिहास काफी पुराना है। ऐसा कहा जाता है कि वर्ष 1918-1919 में स्पैनिश इंलुएंज़ा से इतनी जाने गयी जितनी आज तक किसी महामारी से नहीं गयी। इस फ्लू से लगभग 40 मिलियन लोगों की मौत हुई और इसने कई शहरों से जीवन का नाश कर दिया। वर्तमान में लगभग पूरा विश्व ही कोविड-19 जैसी भयानक महामारी को झेल रहा है। इस महामारी ने कई देशों को तो तबाह किया ही और साथ ही भारत देश में भी इसका प्रकोप रहा है।

कोरोना वायरस ऐसे अतिसूक्ष्म जीव हैं जो जीवित कोशिका में ही वृद्धि कर सकते हैं। यह शरीर के बाहर तो मृत्यप्राय रहते हैं किन्तु शरीर के भीतर पहुँचकर जीवित हो जाते हैं। यह आकार में इतने छोटे होते हैं कि इन्हें नग्न आँखों से नहीं देखा जा सकता है। कोरोना वायरस आर.एन.ए वायरस है। कोरोना वायरस, वायरस के ऐसे परिवार से संबंध रखते हैं जिसके संक्रमण से जुखाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। यदि कोई स्वस्थ व्यक्ति किसी कोरोना संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आता है तो उसके कोरोना से ग्रसित होने की आशंका अधिक रहती है इसलिए इससे बचने के लिए सोश्ल डिस्टेसिंग की सलाह दी जाती है। सरकार भी सामाजिक दूरी का पालन करने पर दबाव देती है ताकि इस वायरस से बचा जा सके। इसके साथ-साथ हाथों को बार-बार धोने और अल्कोहल युक्त सैनिटाइजर का प्रयोग करना, बाहर जाते हुये हमेशा मास्क पहनना, हाथ मिलाने की अपेक्षा नमस्ते करना, यदि बाहर से कोई वस्तु घर में

लायी गयी है तो उससे साफ करके फिर प्रयोग में लाना। चेहरे और हाथ को बार-बार छूने से बचना चाहिए।

छींकते और खाँसते समय मुंह को रुमाल से ढंके इसके साथ-साथ अपने तापमान और श्वसन तंत्र की नियमित जांच करना आवश्यक है। जितना हो सके खाने में पौष्टिक भोजन का ही इस्तमाल करें ताकि हमारा इम्यून सिस्टम मजबूत बना रहे। कोरोना वायरस महामारी ने समाज के हर हिस्से को प्रभावित किया है। इसने लोगों को शारीरिक तौर से तो बीमार किया ही है और साथ ही में मानसिक और आर्थिक रूप से कमजोर भी कर रहा है।

इसका संक्रमण सबसे पहले चीन देश के वुहान शहर में प्रारम्भ हुआ। इस वायरस के वुहान शहर में फैलने की वजह से पूरे शहर में तालाबंदी कर दी गयी। इस वायरस के प्रकोप को इस प्रकार से समझा जा सकता है कि दूसरे विश्व युद्ध के बाद से पहली बार लोगों की आवाजाही पर इतनी सख्त पाबंदी लगानी पड़ी। यहाँ तक कि दुनिया भर में उड़ानों को बंद का दिया गया। धीरे-धीरे अमेरिका, इटली, रूस और भारत आदि तमाम देश इस वायरस के चपेट में आ गए। 'भारत में इस बीमारी का प्रवेश सर्वप्रथम केरल प्रांत 30 जनवरी 2020 को हुआ। ऐसा कहा जाता है कि यह संक्रमित व्यक्ति चीन के वुहान शहर से केरल आया था। इसी क्रम में भारत देश में दूसरा और तीसरा कोविड संक्रमित केस भी केरल में पाया गया। यह दोनों व्यक्ति भी चीन से केरल आए थे। कोरोना वायरस के बारे में यह कहा जाता था कि इसका संक्रमण पहले जानवरों के मध्य देखा जाता था। यह संक्रमण इन्सानों में कैसे प्रारम्भ हो गया। यह सवाल वैज्ञानिकों को भी चुनौती दे रहा है और आज यह वैश्विक महामारी बन चुका है। जिससे आज पूरी मानवजाति को खतरा है। एक समय में भारत देश में भी सख्त लॉकडाउन लगा दिया गया था यहाँ तक कि रेल व्यवस्था को पूरी तरीके से बंद कर दिया गया था।

हम सभी इस बात से भली-भांति परिचित हैं कि कोरोना का दौर एक वैश्विक महामारी का दौर है, जिसमें सही सूचना का प्रसारण एक अहम् भूमिका निभाता है। देश के लोगों को जागरूक करने के लिए मार्च महीने से ही मीडिया ने सूचना देकर लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने का हर प्रयास किया। मास मीडिया ने एंटरटेनमेंट-एजुकेशन की नीति अपनाते हुये समय रहते ही बड़े स्तर पर कोरोना के प्रति जागरूकता पैदा करने की मुहिम शुरू कर दी थी। मीडिया ने इस भयानक महामारी के दौर में लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया। उसने समय-समय पर लोगों को मास्क पहनने, हाथ की सफाई और एक स्वस्थ जीवनशैली के लिए प्रेरित किया।

हमेशा से प्रश्नचिन्ह बने हुए सोश्ल मीडिया ने भी कोविड-19 के प्रति जागरूकता पैदा करने में कोई कमी नहीं रखी। कोविड-19 से जुड़ी हर खबर को समय पर देकर जागरूकता पैदा करने का काम किया गया है। नेशनल काउंसिल फॉर साइन्स एंड टेक्नालजी कम्युनिकेशन (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार) के मंच से 'कोविड कथा' नामक कोविड गाइड का लोकार्पण किया गया। जिसमें कोविड के लक्षण से लेकर से उसके विस्तार तथा रोकथाम का पूरा ब्यौरा बेहद आसान और दिलचस्प अंदाज़ में प्रस्तुत किया गया है। चित्रों के माध्यम से कोविड-19 के बारे में जानकारी दी गयी है। जिससे लोग बड़ी आसानी से इस बीमारी को पूरी तरह से समझ सकते हैं। विज्ञान संचार के क्षेत्र में ऐसे और भी कार्य हुये हैं जो इस बीमारी से बचने के लिए लोगों में एक समझ विकसित करते हैं।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (भारत सरकार) की वेबसाइट पर किड्स, वायु और कोरोना : हू विन्स द फाइट नामक पुस्तक भी उपलब्ध है। इस कॉमिक का मुख्य आइडिया डॉक्टर रवींद्र खैवाल (एडिशनल प्रोफेसर, पर्यावरण स्वास्थ्य विभाग, पी. जी.आई.एम.ई.आर, चंडीगढ़) और डॉक्टर सुमन मोर (एसोसिएट प्रोफेसर, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़) का है। पुस्तक को कॉमिक की भांति बनाया गया है ताकि बच्चों में भी इस बीमारी के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सके। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के जरिये समय-समय पर लोगों में कोविड-19 के प्रति जागरूकता के स्तर को बढ़ाया है। आरोग्य सेतु नाम का एक एप्लिकेशन भी लांच किया गया, जो आपके आस-पास कोविड-19 से ग्रसित लोगों की जानकारी देता है। इसके अलावा सी.एस.आई.आर-निस्पर, नई दिल्ली ने कोविड बुलेटिन की शुरुआत की। साथ ही कोविड-19 से जुड़ी भ्रांतियों से जन सामान्य को बुलेटिन के माध्यम से अवगत कराया। जिसमें मुख्यता कोविड-19 की खबरों को जगह दी गयी है। जिससे लोगों में कोरोना वायरस के प्रति सही जानकारी मिल सकती है, और वह बेहतर तरीके से अपना बचाव कर सकते हैं। सी.एस.आई. आर. ने बी.एच.एल के साथ मिलकर देश में वेंटिलेटर की कमी को पूरा करने का काम भी किया। इसके साथ ही कई जागरूकता कार्यक्रम भी चलाये गए जिससे लोग कोविड के बारे में सही जानकारी प्राप्त कर सकें। इन कार्यकर्मों में 'यश' प्रोग्राम का नाम सबसे ऊपर आता है। 3000 से ज़्यादा लोगों को एन. सी.एस.टी. के यश प्रोग्राम के तहत ट्रैन्ड किया गया है। ताकि आम जनता

को जागरूकता बढ़ाई जा सके। गुजरात राज्य के विज्ञान और तकनीकी विभाग ने कोविड-19 पर जागरूकता जगाने के लिए 10-16 मई तक एक वेबिनार का आयोजन किया। कारोना की जानकारी को रोचक बनाकर लोगों के सामने प्रस्तुत किया गया। ताकि लोग रुचि लेकर उसको पढ़ सके और जागरूक हो सके। इसी क्रम में साइंसटूनिस्ट प्रदीप श्रीवास्तव ने 'बाय-बाय कोरोना' नामक पुस्तक को कार्टून का रूप देकर प्रस्तुत किया। ताकि लोग रुचि लेकर उसको पढ़ सके और अपने आपको बचा सके।

'विज्ञान कार्यक्रमों के संचार और लोकप्रियकरण का मुख्य उद्देश्य जनता के बीच वैज्ञानिक स्वभाव उत्पन्न करना और लोगों को हर स्तर पर वैज्ञानिक रूप से सोचना और उनके जीवन को आसान और सरल बनाना है। युवा पीढ़ी के बीच जांच की भावना को प्रोत्साहित करके, नए वैज्ञानिक दृष्टिकोणों/प्रौद्योगिकियों के बारे में जागरूकता पैदा करना, रचनात्मकता को बढ़ावा देना और सावधानीपूर्वक तैयार किए गए कार्यक्रमों का आयोजन करके कई और तरीकों को प्राप्त किया जा सकता है।'

इस पुस्तक को तेरह अध्यायों में बांटा गया है। इसके साथ इसमें साइंस कार्टून्स के माध्यम से कोरोना वायरस के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। 'बाय-बाय कोरोना' पुस्तक में

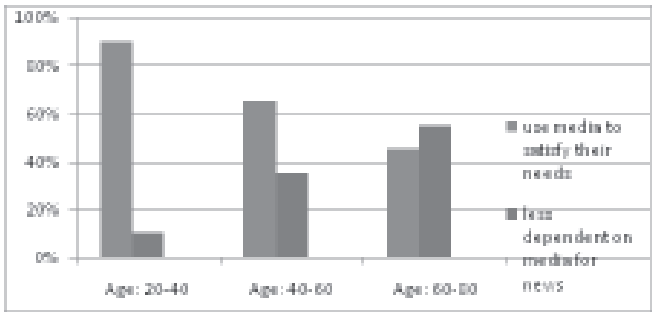

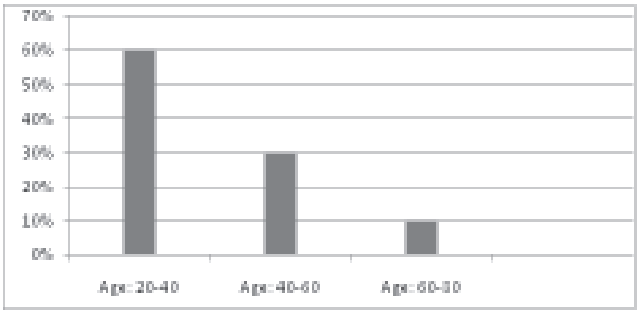

चित्र – कोविड-19 के प्रति जागरूकता का स्तर

महामारी से लेकर वैश्विक महामारी और कोविड-19 के लक्षणों, उसके रोकथाम और सावधानियों का साइंटून्स के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। ताकि लोग रुचि लेकर कोविड-19 से अपना बचाव कर सके। भारत के महाराष्ट्र राज्य में एक 'जागृति' नामक प्रोजेक्ट भी चलाया गया है। जिसके अंतर्गत कला के माध्यम से लोगों में रुचि जगाने का प्रयास किया जाता है। दिल्ली शहर में लोगों में कोविड-19 के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए एक अनूठा तरीका अपनाया गया। इसमें नाटक प्रस्तुत करके लोगों में जागरूकता उत्पन्न की गयी। इस तरह का संचार रोचक होता है। जिससे आम जनता रुचि लेकर कोविड के हर पहलू को भली-भांति समझ सकती है।

वरुण नायक ने अपनी शोध, 92 *मिलियन फेसबुक उपयोगकर्ता भारत को दूसरा सबसे बड़ा देश बनाते हैं*, में इस तथ्य का खुलासा किया है कि 'भारत में कुल 92 मिलियन (फेसबुक उपयोगकर्ताओं में से लगभग 50% 18-24 वर्ष आयु वर्ग के हैं। इसलिए वेब भारत में लगभग 11% या 10.6 मिलियन फ़ेसबुक उपयोगकर्ता 17 वर्ष से कम आयु के हैं, और लगभग 26 मिलियन (कुल फ़ेसबुक इंडिया जनसंख्या का 28%) 25-34 आयु वर्ग में आते हैं। करीब 6.6 मिलियन 35-44 साल के बीच, 2.2 मिलियन 45-54 साल के बीच और बाकी 55 साल से ऊपर के हैं।[3]

परिणाम

उपर्युक्त तथ्यों से पता चलता है कैसे विभिन्न मीडिया ने लोगों के मध्य कोविड-19 के प्रति जानकारी पैदा करने की कोशिश की। लोगों में कोविड-19 के प्रति जानकारी और मीडिया पर निर्भरता एक-दूसरे के पूरक दिखाई देते हैं। उपर्युक्त तथ्यों से यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि 40-60 और 60-80 उम्र के लोगों में कोविड-19 के प्रति जानकारी में कमी देखी गयी और यह भी देखा गया कि इनकी जानकारी के लिए मीडिया पर निर्भरता भी कम है। इन उम्र के लोगों में सामाजिक दूरी के बारे में भी जानकारी में कमी देखी गयी। इसके अलावा मीडिया ने कई तरीकों जैसे कि कार्टून, चित्रों नुक्कड़ नाटक, रंगोली प्रतियोगिता के माध्यम से लोगों में कोविड-19 के प्रति जानकारी पैदा करने की कोशिश की।

विवेचना

विज्ञान संचार के जरिये लोगों में कोविड-19 के खतरे को कम करके तथा जागरूकता उत्पन्न करने का कार्य निरंतर किया जा रहा है, लेकिन अभी हमें पूरी तरह से इस महामारी पर विजय हासिल नहीं की है। इस बीमारी से अब भी लोग संक्रमित

हो रहे हैं। हमें इस बात का अवलोकन करने की आवश्यकता है कि आखिर गैप कहाँ है? क्यों आज भी लोग इस महामारी की चपेट में आ रहे हैं और अपनी जान गंवा रहे हैं? विज्ञान संचार और कोविड-19 के मध्य की जंग अभी भी जारी है! हमें ज़रूरत है एक ऐसे विज्ञान प्रवाह की जो इस बीमारी को अपने साथ बहा ले जाये और हम इस बीमारी पर पूर्णतया विजय हासिल कर ले। अब हम कोविड-19 के साथ अपनी लड़ाई के निर्णायक दौर में पहुँच गए हैं। यह ऐसा दौर है, जब हम पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा और जन स्वास्थ्य संचार को सर्वजनसुलभ बनाकर टीके के प्रति आम लोगों का विश्वास फिर से जीत सकते हैं। अब जब अग्रिम मोर्चे के लोगों और अधिक जोखिम वाले समुदायों को सारी दुनिया में और भारत में भी पूरी सतर्कता के साथ खुले आम टीके लगने लगे हैं, तो सरकारों, विशेषज्ञों और मीडिया को ध्यान देना चाहिए कि वे वैज्ञानिक शब्दावली को सीधी-सरल और सहज भाषा में सर्वजनसुलभ बनाने का प्रयास करें। मीडिया ने कोविड-19 के विरुद्ध जो मुहिम शुरू की है उसको इसी प्रकार गंभीरता से जारी रखना चाहिए। लोगों को गंभीरता से सरल भाषा में कोविड के बारे में निरंतर जानकारी देनी चाहिए। मीडिया की लेखन शैली आम जनता की समझ के अनुसार होने अत्यंत आवश्यक है। मीडिया को अपनी प्रस्तुत की जा रही खबरों में इस तरह की भाषा के प्रयोग से बचना चाहिए जिससे समुदाय में भय का माहौल बने। इसके साथ ही सुनी सुनाई बातों की जगह तथ्यफरक खबरों का प्रस्तुतीकरण होना चाहिए। इसके अलावा उन खबरों को प्राथमिकता देनी चाहिए जिसमें लोगों ने करोना पर विजय प्राप्त की हो।' मीडिया के हर स्रोत ने कोविड जैसी बीमारी को बड़ी गंभीरता से लिया है। चाहे प्रिंट मीडिया हो, सोशल मीडिया या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, यह सारे स्रोत बड़ी गंभीरता से कोविड-19 के मुद्दों को जनता के समक्ष पेश कर रहे हैं। आज भी इस बीमारी ने अपनी जड़ें न सिर्फ भारत में ही अपितु पूरे विश्व में जमाये रखी हैं। आज भी कई लोग इस महामारी की वजह से अपनी जान खो रहे हैं। इस बीमारी से बचने में विज्ञान संचार की नीति काफी हद सही साबित हुई है। इसलिए हमें विज्ञान संचार की नीति को आगे बढ़ाते हुए, इस महामारी से लोगों को बचाने का प्रयास जारी रखना चाहिए। मीडिया को और बेहतर तरीके से जन में जागरूकता पैदा करना चाहिए। इसके साथ ही लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण बढ़ाने का कार्य भी रुकना नहीं चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के जरिये ही हम लोगों को इस बीमारी की चपेट में आने से बचा सकते हैं। विज्ञान संचार के माध्यम से जो कोविड-19 के लिए जो नीतियाँ बनाई गयी हैं हमें उनका पालन करना चाहिए। आज भी यह ज़रूरी है कि लोग सामाजिक दूरी का पालन करे। घर से बाहर निकलते हुए मास्क लगाए। ज़्यादा भीड़ वाली जगह में जाने से बचें। सब्जियों को प्रयोग में लाने से पहले अच्छी तरह से साफ करें। खाँसते और छींकते समय मुंह पर रुमाल रखें। हाथ को बराबर साफ करते रहें। जितना हो सके अपने भोजन में पौष्टिक आहार का सेवन करें।

संदर्भ

1. https://mobi.bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B8%E0%A5%81%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0 %A4%B0%E0% A5% 81%E0%A4%A4
2. https://hindi.webdunia.com/hindi-essay/essay-on-corona-in-hindi-121031700094_1.html.
3. http://vigyanprasar.gov.in/isw/World-first-scientoon-book-on-coronavirus-release-hindi.html
4. https://hindicurrentaffairs.adda247.com/2020/05/dr-harsh-vardhan-launches-multimedia-guide-covid-katha.html
5. https://pib.gov.in/Press Release Page. aspx?PRID=1627282
6. https://dst.gov.in/sites/default/files/COVID%20KATHA_DST_NCSTC_ARMT_HINDI.pdf
7. https://ekbharat.gov.in/images/InstituteActivities/Documents/30005/corona.pdf
8. KhandelwalAnju, Agarwal Ashish, kumarAvanish (2020) An Outbreak Of coronavirus (COVID-19) Epidemic in India: Challenges and Preventions. J Infect Dis Ther 8:421.
9. SharmaPrerna, Gupta Shailly, KushwahaPurnima, KanchanShekhawat, Impact Of Mass Media On Quality Of Life During COVID-19 Pandemic Among Indian Population. International Journal Of Science and Health Research 2020.
10. Malecki M.C & Kristen et al. Crisis Communication And Public Perception Of COVID-19 Risk In The Era Of Social Media. Oxford University Press For Infectious Disease Society Of America, 2020.
11. ChenQiang et al, Unpacking the black box: how to promote citizen engagement through government social media during the COVID-19 Crisis, Elsevier Ltd, 2020.

12. Singh AK, Agarwal B, Sharma A & Sharma P COVID-19 Assessment Of Knowledge And Awareness In Indian Society: J Public Affairs 2020.

13. https://dst.rajasthan.gov.in/content/dstgov/hi/SCIENTIFICSCHEMESCommPopularization.html

14. https://www.prabhasakshi.com/career/there-are-immense-possibilities-in-the-field-of-science-journalism

15. https://www.patrika.com/barabanki-news/corona-virus-awareness-program-in-barabanki-6155612/

16. https://casi.sas.upenn.edu/hindi/iit/covid-19-communication-india-are-we-vaccine-crossroads

17. https://dazeinfo.com/2014/01/07/facebook-inc-fb-india-demographic-users-2014/